विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट
A Unique Gift For International Unity and Development & Quick Evolution of Human Consciousness

Mela Edition

अखण्ड भारत सन्देश
Akhand Bharat Sandesh

पाक्षिक(Fortnightly) हिन्दी/English

वर्ष 14 * अंक 11 * विक्रम सम्वत् 2070 * शाके 1935 * आरोही द्वापर युग का 314 वाँ वर्ष * 16-31 tuojh, 2014 * मूल्य :10.00

True Politics III

सच्ची राजनीति III

Guruji Swami Shree Yogi Satyam Lighting The Inauguration Lamp

Practicing Kriyayoga Meditation at Kriyayoga Camp during Magh Mela 2014

A person is called a true politician when one accurately recognizes the genuine need of all varieties of human beings, animals, plants, atoms and molecules arranged in many forms like the solar system, stars, galaxies, radiations etc. The Constitution should be designed to maintain the welfare of human beings and all other creations. To acquire complete knowledge about everything, one has to practice Kriyayoga meditation to realize five compact sheaths (*koshas*) within self in which we experience five varieties of creation.

The five compact sheaths are atoms and molecules (*anamayakosha*), plants (*praanamayakosha*), animals (*manomayakosha*), human beings (*gyaanamayakosha*) and angels (*anandamayakosha*).

continued on Page 2...

सच्चा राजनीतिज्ञ व्यक्ति वह है जो सभी प्रकार के मनुष्यों की आवश्यकताओं को पूरा कर सके व इसके साथ-साथ जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, अणु-परमाणु, पृथ्वी, सौर्यमण्डल, तारामण्डल व उर्जा के विविध रूप को विधिवत् संरक्षण व सुरक्षा प्रदान कर सके। राष्ट्र के संविधान की रचना सबकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होना चाहिए। उपयुक्त संविधान के निर्माण व सच्ची राजनीति के माध्यम् से सेवा करने के लिए मनुष्य के लिए उपयुक्त आध्यात्मिक विकास होना आवश्यक है। इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए क्रियायोग का अभ्यास एक उच्चतम् व सहज ध्यान की प्रविधि है। क्रियायोग ध्यान से मनुष्य अपने स्वरूप में व्यवस्थित पँचकोषों के अंदर ब्रह्माण्ड की सभी रचनाओं का अनुभव करता है।

क्रियायोग अभ्यास स्वरुप के अंदर पँचकोषी परिक्रमा का अभ्यास है। ये पँचकोष अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, ज्ञानमय, आनन्दमय के नाम से जाने जाते हैं। मनुष्य का प्रत्येक अंग इन पाँचकोषों से निर्मित है जिसे चित्र में दिखाया गया है। मनुष्य जब अपने स्वरूप में एकाग्रता बढ़ाता है तो उसे अनुभव होता है कि स्वरूप में विद्यमान सूक्ष्म स्तरीय या स्थूल रचनाएँ पँचकोषों से निर्मित हैं। इस अनुभूति के बाद मनुष्य सच्चे

-शेष पृष्ठ 2 पर

Pg 1 - 4 True Politics Part III
सच्ची राजनीति III

Pg 5 True Celebration of Republic Day
गणतंत्र दिवस का वास्तविक स्वरूप

Pg 7 - 8
Kriyayoga Reveals The True Concept of *Mauni Amaavasya*
मौनी अमावस्या का वास्तविक स्वरूप

Pg 9 - 10
Deep Kriyayoga Meditation in Mass At Kriyayoga Camp During *Magh Mela* 2014
माघमेले में क्रियायोग ध्यान का वृहद प्रशिक्षण

Glimpse of Kriyayoga Magh Mela Camp
Pg 12

Observe the adjacent diagram of the structure of the five *koshas* and the five *koshas* in the various organs of the body as shown below on this page.

In Kriyayoga meditation, when a person meditates on self – head to toes, the person realizes that each and every part, whether microscopic or macroscopic, is a structure of Consciousness of all creations of the Cosmos. After knowing this, one can become fully capable to work as a true King (*Raajaa*).

The various creations in their Divine form present in five *koshas* (compact sheaths)

Koshas in Various Organs of The Body

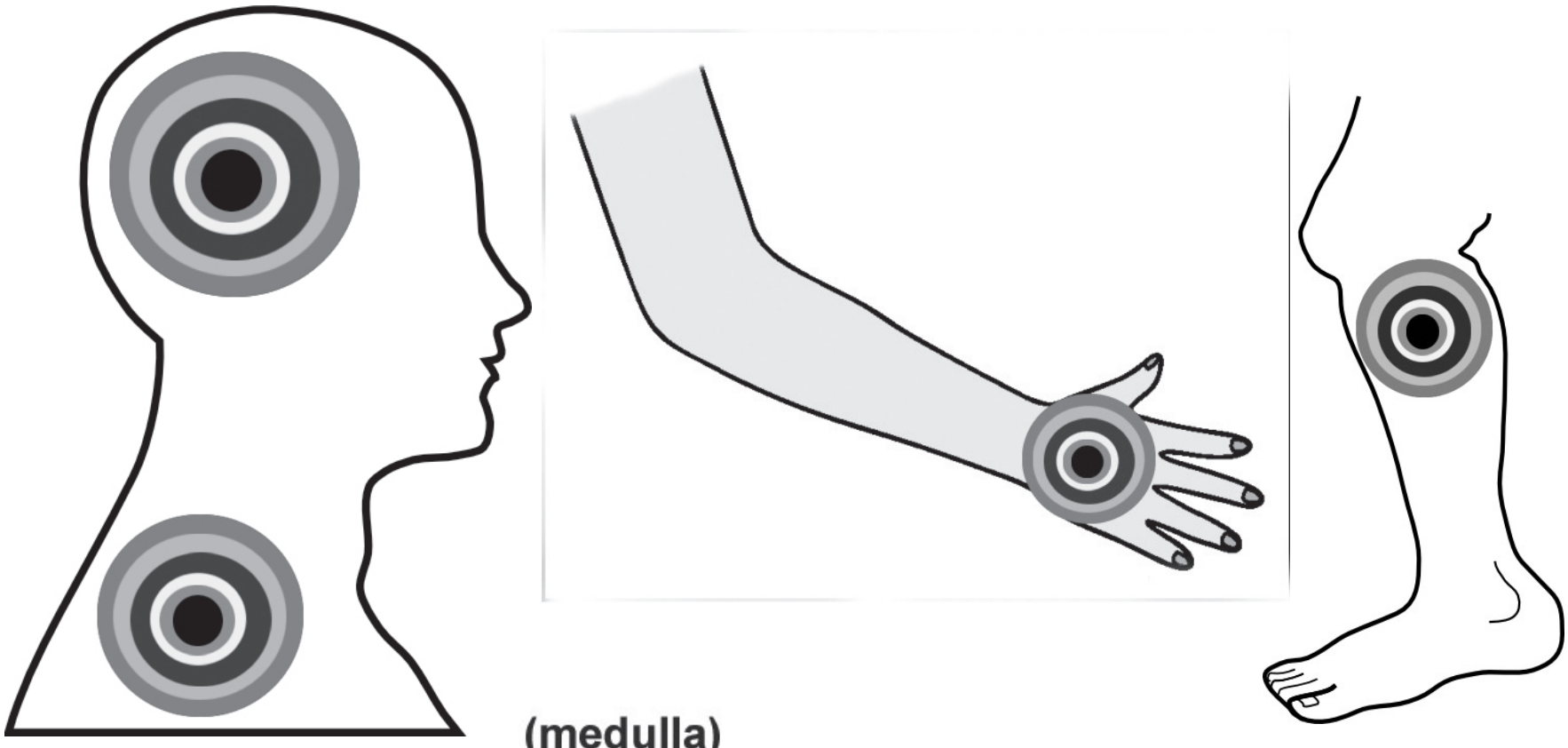

While practicing Kriyayoga meditation, a person realizes that by concentrating on the medulla, one is able to revolve easily within all the five sheaths which represent the five dimensions of creation : atoms and molecules, plants, animals, human beings and angels.

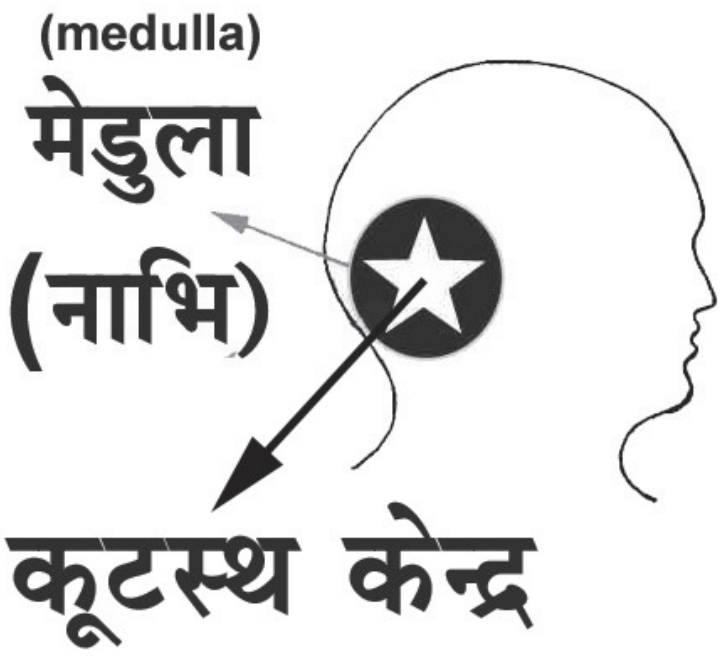

राजनीतिज्ञ के रूप में सेवा करने के लिए सक्षम हो जाता है।

पँचकोषों की सबसे पहले अनुभूति मेडुला के अंदर होती है जिसे योग शास्त्र में नाभि केन्द्र तथा बाइबिल में माउथ ऑफ गॉड कहा गया है। इसी के अंदर परमात्मा के सर्वव्यापी स्वरूप की अनुभूति कूटस्थ के रूप में होती है।

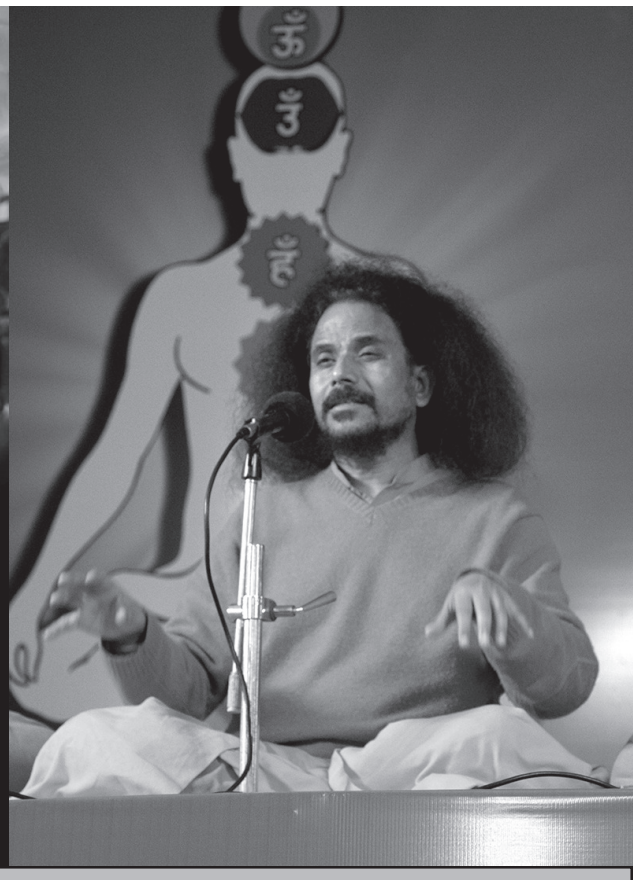

Kriyayoga Practitioners at Magh Mela Camp Listening To Kriyayoga Philosophy by Guruji Swami Shree Yogi Satyam

How to meditate on Medulla Consciousness?

The following are Kriyayoga steps which increase concentration on the medulla:

1) Recharging of 24 elements which constitute human existence
2) Meditation on high intensity field of Shiva consciousness within
3) Meditation on Indra consciousness within
4) Meditation on sensory consciousness within
5) Meditation on Holy vibration : Aum/ Amen/ Amin within
6) Science of learning to circulate power of God within Divine Cave.

By practising the various techniques of Kriyayoga Science as described above while adhering to a natural diet, one can consciously awaken and comprehend existence and knowledge of Truth and Non-violence. This state brings the realization that there is no space and distance between self and God. This means that God has become everything. There is nothing else but God.

The Truth that God has become everything cannot be realized by reading books or listening to lectures. No one can realize the ultimate Truth by practising rituals. **Adi Shankaracharya delivered the message to all human beings that by practising outward rituals, one cannot experience the presence of God and cannot**

मेडुला के चैतन्य स्वरूप में एकाग्रता की विधि को क्रियायोग ध्यान कहते हैं। संक्षेप में वह इस प्रकार है :

1- मानव स्वरूप को निर्मित करने वाले 24 तत्वों में एकाग्रता का अभ्यास।

2- अन्तःकरण में शिव शक्ति की गहन अनुभूति।

3- अन्तःकरण में इन्द्र शक्ति के चैतन्य स्वरूप की अनुभूति।

4- अन्तःकरण में इन्द्रियों के चैतन्य स्वरूप की अनुभूति।

5- अन्तःकरण में व्याप्त ओम शक्ति की अनुभूति।

6- अन्तःकरण में स्थित दिव्य गुफा में ईश्वर शक्ति के सूक्ष्म प्रवाह की अनुभूति।

क्रियायोग ध्यान की उक्त क्रियाओं के अभ्यास और क्रियायोग विज्ञान पर आधारित आहार-विहार के सही नियमों के पालन से साधक अन्तःकरण में सत्य व अहिंसा की अनुभूति कर लेता है। ऐसी अवस्था में स्पष्ट ज्ञान हो जाता है कि हमारे और परमात्मा के बीच दूरी शून्य है। इसका वास्तविक अर्थ है कि परमात्मा स्वयं हमारे और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के रूप में प्रकाशित हो रहे हैं। इससे स्वतः स्पष्ट है कि केवल परमात्मा का अस्तित्व है। एकमात्र परमात्मा ही दृश्य व अदृश्य सभी स्वरूपों में प्रकाशित हैं।

परमात्मा ही सभी रूपों में प्रकाशित हैं, इस सत्य की अनुभूति किताब पढ़ने या प्रवचन सुनने से संभव नहीं है। मानसिक, बौद्धिक तर्क वितर्क से सत्य का ज्ञान नहीं प्राप्त किया जा सकता है। सत्य को कर्मकाण्ड के द्वारा नहीं जाना जा सकता है। आदिशंकराचार्य ने अपने सुप्रसिद्ध शतश्लोकी में कहा है कि बाह्य कर्मकाण्ड से अज्ञान का विनाश संभव नहीं है क्योंकि कर्मकाण्ड और अज्ञान दोनों परस्पर विरोधी नहीं हैं। ज्ञान की

become a Self-Realized Master because ignorance and rituals are not mutually contradictory. Only experienced knowledge brings the state of Self-Realization and removes all ignorance. Mind and intellect have no answers to the most important questions, 'Who am I? How was this universe created? Who is its creator?' Kriyayoga is the fastest, easiest and royal way to attain experienced knowledge.

Rituals are very important for those who are in the Kindergarten school of spirituality. Therefore, one should not criticize ritual worship.

Who are True Politicians?

Those people who have experienced the five-sheath structure within self are true politicians because they have true knowledge and power to serve all varieties of human beings and all creations based on the principles of Truth and Non-violence. Those who are learning to experience the five-sheath structure within self are co-politicians and are most suitable to help and assist true politicians. ☙

प्राप्ति और स्वयं को आत्मसाक्षात्कारी संत में रूपान्तरित करने के लिए अनुभवजन्य ज्ञान की आवश्यकता है। केवल अनुभवजन्य ज्ञान के द्वारा ही अज्ञान से मुक्त हुआ जा सकता है। मन और बुद्धि के पास जीवन के सूक्ष्म रहस्यों का ज्ञान नहीं है। हम कौन हैं **?** ब्रह्माण्ड कैसे प्रकट हुआ **?** ब्रह्माण्ड का निर्माता कौन है **?** पृथ्वी पर आने का लक्ष्य क्या है **?** हम कहाँ से पृथ्वी पर आये हैं और एक दिन कहाँ अदृश्य हो जाएँगे **?** आदि प्रश्नों का अनुभवजन्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए क्रियायोग ध्यान पूर्ण, सरलतम्, शीघ्रतम् और राजयोग का आध्यात्मिक मार्ग है।

कर्मकाण्ड गलत नहीं है। कर्मकाण्ड का अभ्यास आध्यात्म विज्ञान की प्रारम्भिक शिक्षा के रूप में है। जिस प्रकार नर्सरी में शिक्षा पाते हैं उसी प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान का प्रारम्भ कर्मकाण्ड के अभ्यास से होता है। यह जानना आवश्यक है कि कर्मकाण्ड द्वारा परमात्मा के अनन्त ज्ञानमय, शक्तिमय, परमानन्दमय स्वरूप की पूर्ण अनुभूति संभव भी नहीं है। कर्मकाण्ड ठीक उसी प्रकार है जैसे बच्चों का खेल।

सच्चा राजनीतिज्ञ कौन है ?

वे सभी लोग जो क्रियायोग ध्यान के द्वारा अपने अंदर पँचकोशों की अनुभूति कर लिये हैं सच्चे राजनीतिज्ञ हैं क्योंकि उनके अंदर सम्पूर्ण ज्ञान और शक्ति प्रकाशित हो गया है। अन्तःकरण में पँचकोषों की अनुभूति होने पर मनुष्य को सत्य व अहिंसा के सिद्धान्त पर ब्रह्माण्ड के समस्त रचनाओं की सेवा करने का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। उसके द्वारा की गयी सेवा से सभी का उत्थान होता है और ऐसा व्यक्ति ही राष्ट्र का सच्चा मार्गदर्शक होता है। वे सभी लोग जिनकी क्रियायोग में भक्ति परिपक्व हो गयी है, राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेकर राष्ट्र निर्माण के महायज्ञ को पूर्ण कर सकते हैं। ☙

Kriyayoga Meditation Practice at Banyan Tree Meditation Hall During Magh Mela 2014

True Celebration of Republic Day of India
(Jan 26)

गणतंत्र दिवस का वास्तविक स्वरूप

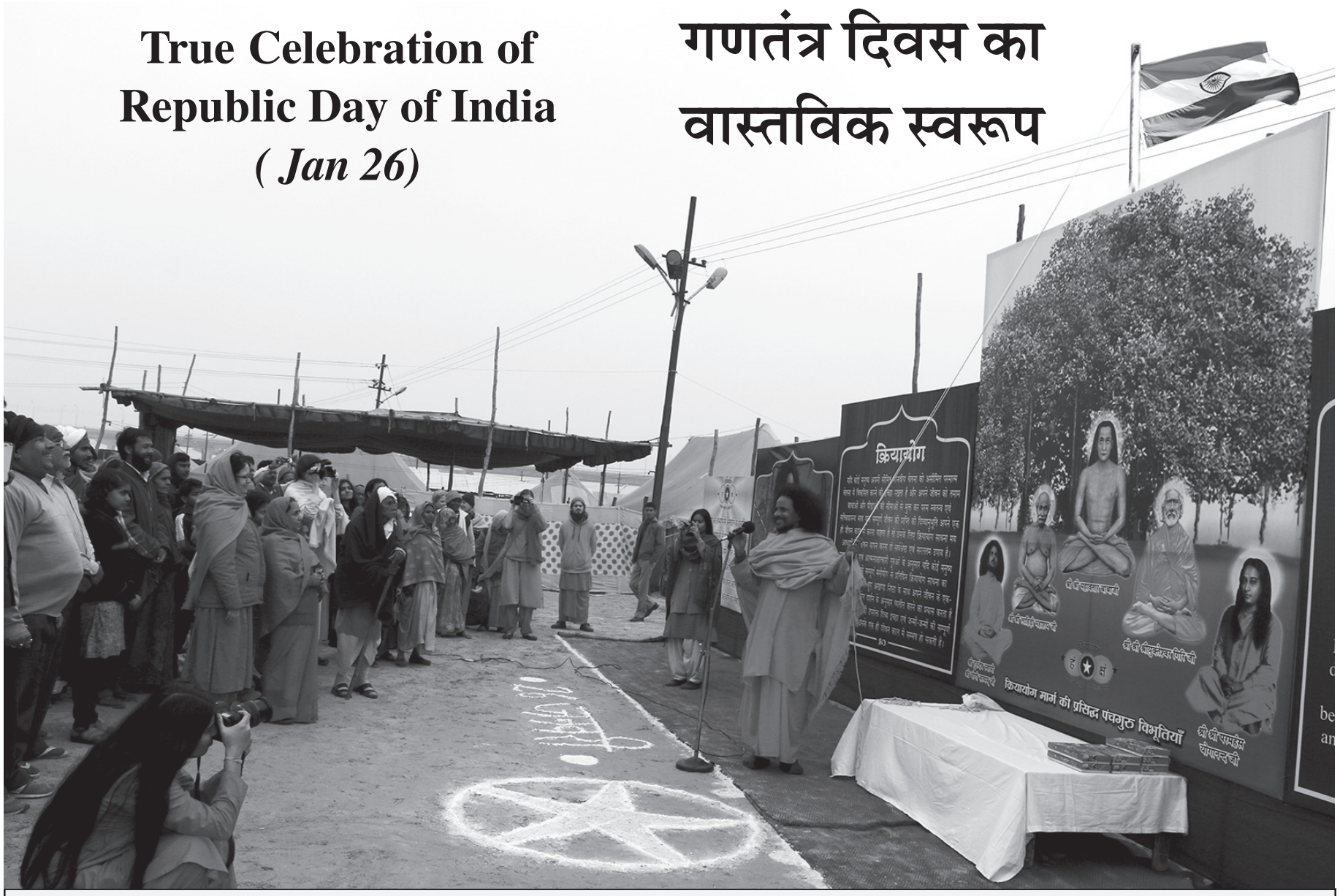

Republic Day Celebration at Kriyayoga Mela Camp 2014

"The perfect celebration of Republic Day is to practice Kriyayoga Meditation", declared Swami Shree Yogi Satyam at the Kriyayoga Camp at Magh Mela on Triveni Road. Many international devotees from USA, Canada, Russia, Czech Republic, etc. joined with Indian devotees to participate in the festivities at the Kriyayoga Camp.

Elaborating on the meaning of Republic Day, Swami Satyam said that 'Day' represents light or knowledge and 'public' represents the people. When one practices Kriyayoga and enters into *samadhi,* then one realizes that the people existing today are actually the reincarnation of the same people who existed in the past. This realization is the True Knowledge and is symbolically demonstrated as 'day'. Our existence is Eternal which is traditionally known as Sanatan.

Swamiji continued by saying that Republic Day is perfectly honoured only when one strives continuously to awaken all hidden knowledge within. He stated that the nature of the human being

''समाधि की अवस्था में अनुभव होता है कि क्रियायोग ध्यान की महिमा की अनुभूति गणतंत्र दिवस का वास्तविक समारोह है।'' गणतंत्र दिवस के अवसर पर उक्त विचार को स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने माघमेले में त्रिवेणी रोड पर सेवारत क्रियायोग शिविर में आये हुए सभी श्रद्धालुओं को अनुभव कराया। इस अवसर पर अमरीका, कनॉडा, यूरोप, ब्राजील, सिंगापुर आदि देशों से आये हुए भक्तों के साथ-साथ भारतीय भक्तों की भारी संख्या उपस्थित थी।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने ''गणतंत्र दिवस'' में छिपी सच्ची भावनाओं को व्यक्त करते हुए स्पष्ट किया कि क्रियायोग ध्यान में इन्ट्यूशन जागृत होने पर गणतंत्र दिवस में छिपा सही भाव अनुभव होने लगता है। ''गण'' का अभिप्राय समूह, ''तंत्र'' का अभिप्राय समूह से जुड़ी हुई शाश्वत् नियमावली तथा ''दिवस'' का अभिप्राय ज्ञान से है। जनसमूह को गण कहा गया है। वर्तमान में हम जिस जनसमूह के साथ हैं, ये जनसमूह किसी और रूप में अतीत में भी था और किसी अन्य रूप में भविष्य में भी रहेगा। जनसमूह से संबंधित इस शाश्वत् नियमावली को तंत्र कहते हैं और इसका ज्ञान होना ही दिवस कहा जाता है। योगेश्वर श्रीकृष्ण ने अर्जुन को इसी ज्ञान की अनुभूति कराया था। अर्जुन को समझाते हुए योगेश्वर श्रीकृष्ण ने स्पष्ट किया था कि हे अर्जुन, हम तुम और सभी कौरव पाण्डवगण पहले भी थे और ये आगे भी रहेंगें। इस तरह से हम सब सनातन हैं। यह अनुभूति ही सच्चा ज्ञान

-शेष पृष्ठ 6 पर

is to remain one with complete unit of knowledge – knowledge of creation, preservation and change. When any person or anyone experiences this knowledge, then one realizes his nature as ever-existing, ever-conscious and ever-new Bliss. Kriyayoga meditation fulfills this desire easily.

People have a comprehensive guide for spiritual knowledge and this guide is Srimad Bhagavad Gita, four ponderous Vedas, 108 Upanishads, six systems of Hindu philosophy, Bible and Quran, etc. Realization of all of these is easily achieved in Kriyayoga meditation. The knowledge of science and technology, astronomy and astrology, history and geography, and many other subjects is also ingrained within Kriyayoga meditation. In short, the entire knowledge of all kinds is packed within Kriyayoga Science.

Swami Satyam stated that the aim of the Kriyayoga Camp is to spread Kriyayoga meditation in the most scientific and easiest way to fulfill dreams and desires of incarnations in order to realize oneness with complete unit of knowledge – knowledge of creation of all things, preservation of all things and change according to need. Whenever a human is in perfect devotion in practicing Kriyayoga meditation, they realize their consciousness as ever-existing, ever-new Bliss and one with the knowledge needed at the moment. However, when a person gets detached from Kriyayoga meditation immediately the realization of their ever-existing, blissful nature and awakened knowledge enters into dormancy. In this state, the human being realizes three-fold suffering – physical, mental and spiritual.

Swami Shree Yogi Satyam concluded that the aim of human beings should be to practice Kriyayoga meditation until they realize that their entire existence is the consciousness of Kriyayoga and they never feel knowingly or unknowingly apart from it at any time. In this state, human beings attain the realization of their oneness with God. ॐ

- पृष्ठ 5 के आगे

है जिसे दिवस कहते हैं। स्पष्ट है कि गणतंत्र दिवस का अभिप्राय इस ज्ञान से जुड़ना जिसमें अनुभव होता है कि हम सब सनातन हैं, पहले भी थे आज भी हैं और आगे भी रहेंगे। सनातन ज्ञान की व्यापक अनुभूति में यह भी पता चलता है कि ज्ञान के पूर्ण रूप को तीन तरह से अनुभव करते हैं जिसे (सृजन) ब्रह्मा का ज्ञान, (सुरक्षा) विष्णु का ज्ञान, (शिव) परिवर्तन का ज्ञान कहते हैं। इस ज्ञान की अनुभूति होते ही मनुष्य अनुभव करता है कि वह सनातन है और उसका स्वभाव सर्वज्ञ, सर्वव्यापी और परमानन्द है। क्रियायोग ध्यान पूर्ण ज्ञान तत्व है जिसमें डुबकी लगाने पर इसके अंदर श्रीमद्भगवद्गीता, वेद, 108 उपनिषद व हिन्दू दर्शन षटदर्शन, बाइबिल, कुरान इत्यादि में निहित ज्ञान की अनुभूति होती है और इसके साथ-साथ इन्जीनियरिन्ग, मेडिकल विज्ञान, नक्षत्र व ज्योतिष विज्ञान, इतिहास से संबंधित सम्पूर्ण ज्ञान की अनुभूति होती है। संक्षेप में क्रियायोग पूर्ण ज्ञान तत्व के रूप में है।

क्रियायोग प्रशिक्षण के दौरान क्रियायोग ध्यान का विधिवत् अभ्यास कराते हुए स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने स्पष्ट किया कि क्रियायोग ध्यान के अभ्यास से मनुष्य की जन्मों-जन्मों की इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं और वह प्रतिपल पूर्ण ज्ञान तत्व से एकता की अनुभूति कर लेता है। ऐसी अवस्था में वह स्वरूप तथा ब्रह्माण्ड की किसी भी रचना का इच्छानुसार सृजन, संरक्षण तथा परिवर्तन करने के अलौकिक ज्ञान से विभूषित हो जाता है। यही अपने अंदर ब्रह्मा, विष्णु और शिव शक्ति का दर्शन करना है। जैसे ही क्रियायोग ध्यान की अनुभूति से साधक अलग होता है उसके अंदर विद्यमान विराट ज्ञान सुषुप्त हो जाता है और वह अपने परमानन्दमय, ज्ञानमय, शांतिमय स्वरूप को विस्मृत कर दैहिक, दैविक, भौतिक तापों से ग्रसित हो जाता है। ॐ

मौनी अमावस्या का वास्तविक स्वरूप

अन्तरगंगा के स्नान से बाह्य गंगा में स्नान का पूर्ण लाभ प्राप्त होता है

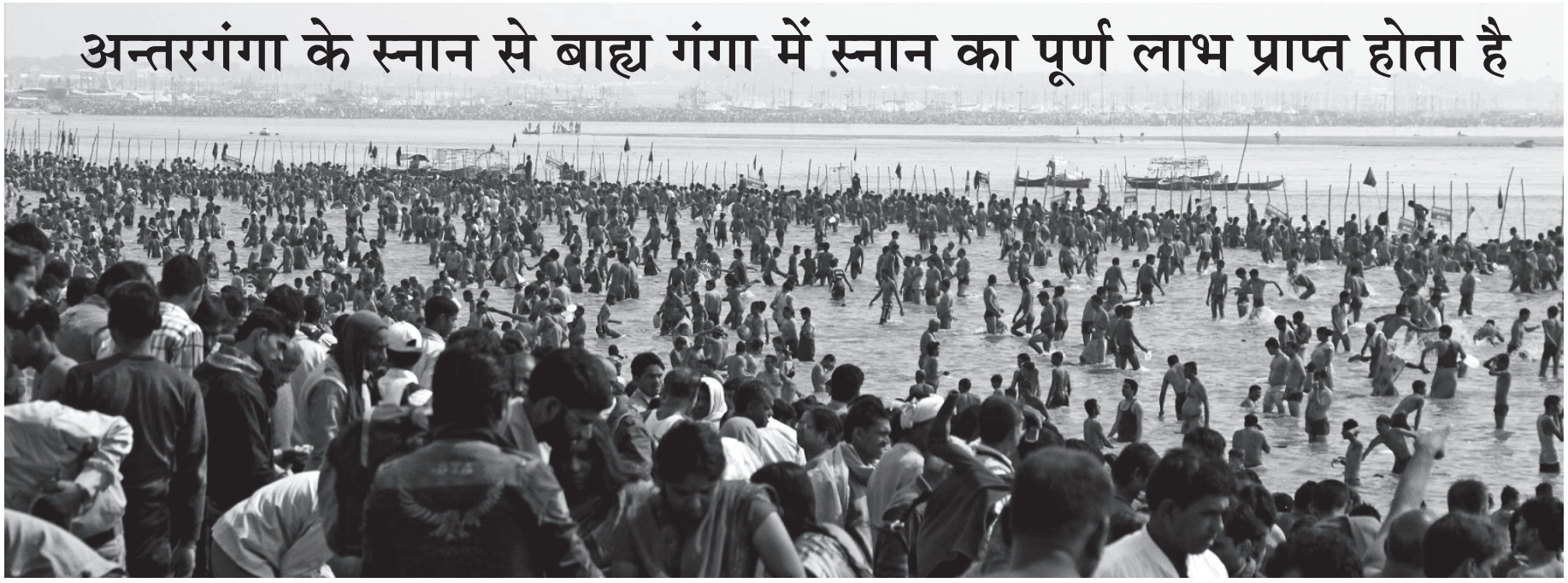

Kriyayoga Reveals The True Concept of *Mauni Amaavasya*

Swami Shree Yogi Satyam conducted the Kriyayoga Magh Mela class on the special occasion of *Mauni Amaavasya* (January 30, 2014). The Mela class was attended by many Indian and foreign visitors. Under one large tent, people of all creeds, ages and with disabilities enjoyed to practicing Kriyayoga together.

Swamiji discussed the True concept of *Mauni Amaavasya* during the class. He stated that True *Maun* is known as complete silence, which is only possible when a person realizes their oneness with God, where God means the state of Omniscient, Omnipotent, Immortal consciousness. Swamiji explained that *Mauni Amaavasya* is comprised of two words, '*maun*' and '*amaavasya*'. *Amaavasya* represents ignorance (darkness) and *maun* represents the state of oneness with complete Truth, which is oneness with God. A person who realizes oneness with God in the atmosphere of surrounding darkness is known as the state of *Mauni Amaavasya*.

Swamiji explained that through Kriyayoga practice a person can reach to the state of *Mauni Amaavasya* very quickly. Scriptures reveal that in order to experience the perfect state of *Mauni*

बाह्य गंगा में स्नान का पूर्ण लाभ तभी प्राप्त होता है जब साधक अपने अंदर की गंगा, यमुना, संगम, त्रिवेणी में स्नान करता है। क्रियायोग ध्यान के द्वारा अन्तरगंगा का दर्शन प्राप्त होने पर साधक परम निर्मल अवस्था (निर्विकार अवस्था) की प्राप्ति कर लेता है। ऐसी अवस्था में वह दैहिक, दैविक, भौतिक तापों से मुक्त हो जाता है। मानव स्वरूप के सिर व रीढ़ में प्रवाहित होने वाली उर्ध्वमुखी सूक्ष्म प्राणशक्ति गंगा तथा अधोमुखी प्राणशक्ति यमुना का स्वरूप है। क्रियायोग ध्यान के द्वारा उर्ध्वमुखी और अधोमुखी प्राणधाराओं को आज्ञाचक्र में विद्यमान कूटस्थ शक्ति में समागम करने पर साधक के अंदर सरस्वती प्रकट होती हैं जिसे योगिक भाषा में इंट्यूशन, विवेक, अंतरज्ञान, तीसरा नेत्र आदि रूपों में वर्णित किया गया है। आज्ञाचक्र के अंदर विद्यमान कूटस्थ महाशक्ति में उर्ध्वमुखी और अधोमुखी प्राणधाराओं का समागम होता है इसलिए कूटस्थ को अन्तःकरण में संगम, त्रिवेणी कहा गया है।

''**मौ**नी अमावस्या भारतवर्ष का प्रमुख पर्व है। एक समय था कि भारतदेश के अधिकांश लोग साल के बारहों महीने पूर्ण ज्ञान के आभामण्डल में संतृप्त रहते थे। वे मौन रहते हुए भी अपने सभी विचारों का आदान-प्रदान करने में सक्षम थे। ऐसे उच्च ज्ञान से विभूषित लोग अज्ञानमय वातावरण में रहते हुए भी ज्ञान की पूर्णावस्था में बने रहते थे। मौनी अमावस्या पर्व को समझ लेने पर भारत की उच्चतम् आध्यात्मिक स्थिति का पता चलता है। ''भारत'' शब्द ज्ञान से युक्त अवस्था से संबंधित है। वर्ष का अभिप्राय बारह महीनों से है तथा अमावस्या का अभिप्राय घोर अंधकार से है। घोर अँधकार अज्ञान की स्थिति का पर्याय है। भारत एक ऐसा देश था जहाँ के लोग चतुर्दिक अज्ञान के वातावरण में रहते हुए भी ज्ञान की उच्चावस्था में बने रहते थे और आपस में विचार की अभिव्यक्ति मौन अवस्था में करने में सक्षम थे। इस ऊँची अवस्था को सदैव याद रखने के लिए मौनी अमावस्या का पर्व मनाया जाता रहा है। इस स्थिति में मनुष्य के अन्तःकरण में त्रिवेणी, संगम व गंगा, यमुना, सरस्वती

-शेष पृष्ठ 8 पर

Amaavasya, it takes one million years of diseaseless life. Swami Satyam ji stated that fifty minutes of devoted Kriyayoga practice covers one hundred years time in one day. If one can practice Kriyayoga 10 hours per day, then one can cover one million years in approximately three years time.

Swami Shree Yogi Satyam went on to explain to the audience that Kriyayoga practice awakens dormant intuition, which brings the realization that Immortal consciousness (God) has become all creations – visible and invisible. This realization removes lust, anger, attachment, aversion, illusion, pride, habit and egoistic activities.

Swamiji stated that to achieve this atmosphere is the ultimate aim of human beings. The time when we have this atmosphere is known as the period of Truth – Golden Age (*Satya Yuga*) and the opposite of this is referred to as the Ignorant Age – Dark Age (*Kali Yuga*).

Kriyayoga meditation is the joyful practice in which we experience ascending and descending understanding power consciously from *Satya Yuga* , to *Treta Yuga*, to *Dwapara Yuga* to *Kali Yuga* and likewise from *Kali Yuga* to *Satya Yuga*, respectively. He stated that when anyone is capable of practicing this consciously, they are one with God consciousness.

In the process of learning Kriyayoga meditation, we gradually realize that so-called physical illness, mental stresses and spiritual ignorance are gradually removed.

The moment this three-fold suffering (physical, mental and spiritual illnesses) are removed permanently, a person is settled into the consciousness of *Moksha*. Swami Satyam ji informed the audience that the Kriyayoga Ashram and Research Institute is fully dedicated to display joyfully its role to spread Kriyayoga to each home and to help each and every person realize that they are one with God. ☙

-पृष्ठ 7 के आगे

का स्वरूप सम्यक रूप से प्रकाशित हो जाता है।'' उक्त विचार अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्ति स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने त्रिवेणी रोड पर सेवारत क्रियायोग शिविर में व्यक्त करते हुए उपस्थित साधकों एवं कल्पवासियों को क्रियायोग ध्यान का विधिवत् अभ्यास कराया। स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे स्पष्ट किया कि पूर्ण ज्ञान के आभामण्डल में मनुष्य की स्थिति संगम की तरह होती है। प्रयाग में संगम में दृष्टि डालने से स्पष्ट होता है कि संगम गंगा यमुना का मिलन है। माँ गंगा के पावन जल में सड़न नहीं होती है जबकि यमुना के जल को रखने पर उसमें सड़न हो जाती है। यमुना का जल संसारिकता को प्रकट करता है और गंगा का पावन जल उच्च आध्यात्मिक अवस्था को प्रकट करता है। जिस समय मनुष्य आध्यात्मिक उच्चावस्था में रहते हुए सांसारिक कार्यों को करने में सक्षम हो जाता है उस समय वह संगम में स्थित होता है। संगम की इस अवस्था में रहते हुए जब मनुष्य अपने समस्त क्रियाकलाप को आत्मा - इन्ट्यूशन (सरस्वती) के निर्देश से करता है तो मनुष्य का अस्तित्व त्रिवेणी आभामण्डल में होता है। स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने क्रियायोग ध्यान का विधिवत् अभ्यास कराते हुए स्पष्ट किया कि क्रियायोग ध्यान में शीघ्रता से समाधि घटित होती है और समाधि की स्थिति में अनुभव होता है कि संगम, त्रिवेणी, मौनी अमावस्या आदि सब भिन्न-भिन्न आध्यात्मिक स्थितियाँ हैं।☙

Deep Kriyayoga Meditation in Mass At Kriyayoga Camp During Magh Mela 2014

Inauguration Program News

... continued from back page

माघमेले में क्रियायोग ध्यान का वृहद प्रशिक्षण

उद्घाटन समारोह

क्रियायोग ध्यान ऋषि-मुनि में रूपान्तरण का विज्ञान

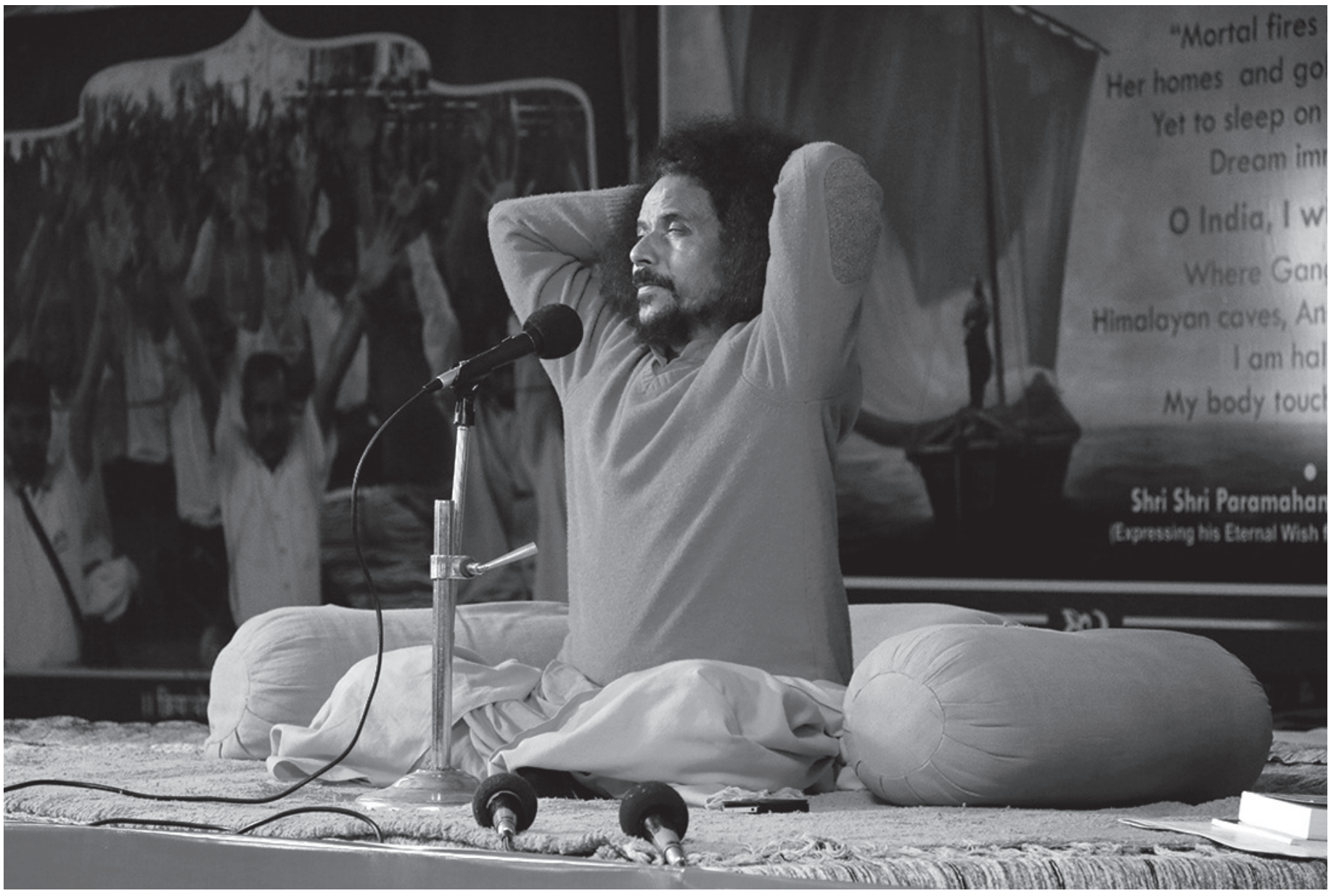

Paramahansa Yogananda forecasted his future plan on the holy occasion of the last supper of his departure from this earth into the astral world through the gateway of mahasamadhi, at 9:30 p.m. in the Biltmore Hotel in Los Angeles on March 7th, 1952.

January 23, 2014 is very important because the past, present, future of India and human civilization was explained by Swami Shree Yogi Satyam and was experienced by all deep practitioners of Kriyayoga meditation who attended the Kriyayoga Camp at Triveni Road, adjacent to Pontoon Bridge #2 on the Holy bank of Ganga.

The true idea and thought about Kriyayoga science was explained by Swami Shree Yogi Satyam, which

त्रिवेणी रोड पर सेवारत क्रियायोग शिविर में अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने दीप प्रज्जवलित करके क्रियायोग शिविर का उद्घाटन किया । कार्यक्रम में भारत तथा अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, गयाना, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि देशों से आये हुए चिकित्सक, इंजीनियर व प्रबुद्ध वर्गों के साथ-साथ तीर्थयात्रियों व कल्पवासियों ने भारी संख्या में भाग लिया।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने स्पष्ट किया कि क्रियायोग ध्यान के अभ्यास से मानव का रूपान्तरण ऋषि-मुनि में हो जाता है। उन्होंने ऋषि शब्द की आध्यात्मिक और तात्विक विवेचना करते हुए स्पष्ट किया कि ऋषि शब्द ऋजु रेखा से बना है। ऋजु रेखा का अभिप्राय सीधी रेखा से है तथा सीधी रेखा असीमता को व्यक्त करती है। इस प्रकार असीमता के मार्ग पर चलना ही ऋषि में रूपान्तरित होना है। स्वामी जी ने आगे कहा कि शास्त्रों में वर्णित सीधी रेखा का अभिप्राय बाहर किसी सीधी रेखा को बनाकर उस पर चलना नहीं है। बाहर

-शेष पृष्ठ 10 पर

explains ultimate reality behind each and every thing, idea, thought, concept and object. It was explained that a person who walks on the straight line (Rizu Rekha) is known as Rishi. Swamiji explained that learning how to draw a straight line and walk along a straight line cannot be explained using present engineering and scientific terminology.

Through the practice of Kriyayoga, intuition power is awakened quickly. Through intuition we realize that Kriyayoga science is the perfect and complete subject because it gives the perception that no one can draw a straight line by using a scale or using any tool because the earth is round and each and every point on the earth is affected by gravitational forces. The average person is not able to walk the straight line because they live life based on the concept of duality.

Only through Kriyayoga practice, with the help of thoughts and ideas, can we draw the straight line and be able to walk on the straight path, which symbolizes Immortality and our oneness with God consciousness.

The inauguration was well attended by many Indian citizens who have travelled from all over India as well as foreigners from Canada, USA, Russia, Singapore, Poland, Czech Republic, etc. ☙

-पृष्ठ 9 के आगे

अर्थात् दृश्य जगत में हम सीधी रेखा नहीं बना सकते हैं क्योंकि पृथ्वी का स्वरूप गोल है। सीधी रेखा बनाने पर भी वह वक्र ही रहती है। पृथ्वी पर अलग-अलग स्थान पर गुरुत्वाकर्षण बल का स्वरूप अलग-अलग है इसलिए सीधी रेखा नही बनाया जा सकता है। स्वामी जी ने आगे स्पष्ट किया कि सीधी रेखा असीमता का संबोधन है।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने विषय पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हुए स्पष्ट किया कि शास्त्रों में वर्णित शब्दों व वाक्यों का अर्थ बोलचाल की भाषा से पूर्णतया भिन्न है जिसे केवल क्रियायोग ध्यान की गहनता में प्रवेश करने पर ही जाना जा सकता है। स्वामी जी ने आगे कहा कि क्रियायोग ध्यान के अभ्यास द्वारा साधक अतीत-वर्तमान-भविष्य के बीच दूरी की शून्यता का अनुभव कर लेता है। अतीत-वर्तमान-भविष्य के बीच दूरी की शून्यता की अनुभूति करना ही असीमता की अनुभूति है और यही ऋजु रेखा पर चलने की क्रिया है। स्वामी जी ने आगे कहा कि क्रियायोग ध्यान के द्वारा मन पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त करने वाले को मुनि कहते हैं। ☙

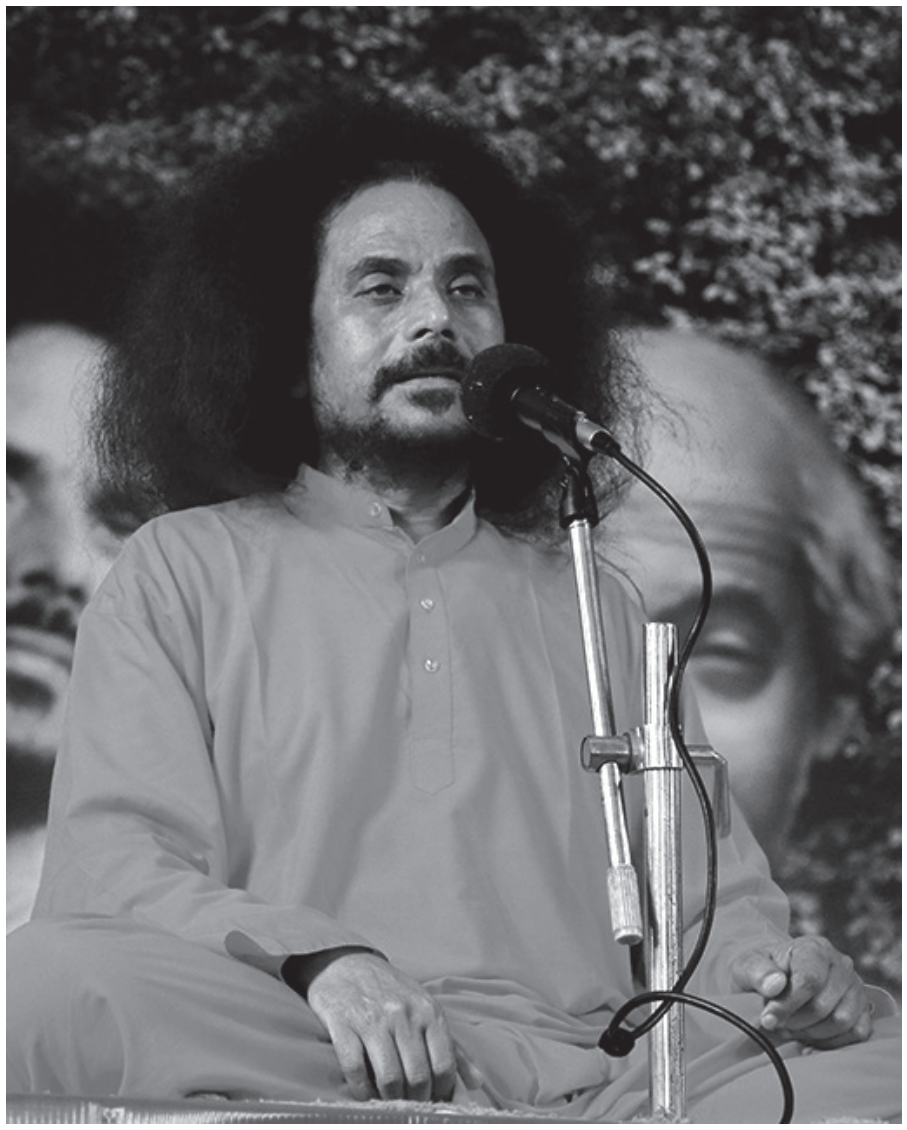

धर्म का वास्तविक स्वरूप

क्रियायोग सत्संग का संक्षिप्त अंश

धर्म का वास्तविक अर्थ रेलिजन है। रेलिजन शब्द रेलिगेयर से बना है जिसका अभिप्राय जोड़ना है। आज तथाकथित धर्म वास्तव में धर्म नहीं सम्प्रदाय हैं क्योंकि यह समाज को विभाजित करता है। क्रियायोग ध्यान के अभ्यास से अन्तरदृष्टि प्रकाशित होने पर स्पष्ट होता है वास्तविक धर्म वह जो समाज को समाज से, मानव को मानव से जोड़ता है। वे सभी विचार, परम्पराएँ तथा नीतियाँ जो अलगाववाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद को प्रकट करती हैं, धर्म के विपरीत हैं। क्रियायोग ध्यान के अभ्यास से मनुष्य अपने सनातन स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर लेता है इसजिए क्रियायोग ध्यान को सनातन धर्म कहा गया है। इसी को आत्मधर्म भी कहते हैं जिसके अल्प अभ्यास से मनुष्य बहुत बड़े भय मृत्युभय से मुक्त हो जाता है।

स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ।

॥ श्रीमद्भगवद्गीता 2:40॥

आत्मधर्म का अल्प पालन भी महान् भय अर्थात् जन्म मरण के भय से मुक्ति देता है।

श्रीमद्भगवद्गीता में स्पष्ट किया गया है कि अपने धर्म का अल्प पालन करने पर भी बहुत बड़े भय से मुक्ति मिलती है। यहाँ स्वधर्म का अभिप्राय है आत्मधर्म। आत्मधर्म का अभिप्राय है आत्मा का धर्म। आत्मा का धर्म है अमरता। अतः अमरता की अनुभूति करने के विज्ञान के अल्प अभ्यास से भी मनुष्य दैहिक, दैविक, भौतिक तापों से मुक्त हो जाता है। ☙

‘अखण्ड भारत सन्देश’ का उद्देश्य

v[k.M Hkkjr

की शाब्दिक एवं तात्विक व्याख्या

‘अखण्ड भारत सन्देश’ विश्व के सभी राष्ट्रों को एक सूत्र में जोड़ने के लिए एक अद्वितीय समाचार-पत्र है, जिसका मुख्य लक्ष्य है - मूल सत्य को स्थापित करना। इस समाचार-पत्र की शाब्दिक व्याख्या से मूल सत्य स्वयं प्रकाशित हो जाता है। ‘अखण्ड’ का आशय है, अविभाज्य और ‘भारत’ का आशय है ‘भा’ से रत । भा का अभिप्राय सम्पूर्ण ज्ञान से है। भारत ज्ञान युक्तावस्था का संबोधन है जो सदैव अविभाज्य है। जब मनुष्य इस अवस्था में होता है तो उसके द्वारा दिया गया संदेश सदैव सत्य होता है।

इस समाचार-पत्र का उद्देश्य है, पूरे विश्व की ऐसी घटनाओं को प्रकाशित करना जो मानव को मानव से, राष्ट्र को राष्ट्र से, पुरुष को प्रकृति से तथा आत्मा को परमात्मा से जोड़ने में मदद करें। ‘अखण्ड भारत संदेश’ सनातन भारतीय संस्कृति ‘‘वसुधैव कुटुम्बकम्’’ की भावना का पूरे विश्व में विस्तार करेगा।

‘‘अखण्ड भारत संदेश’’ के व्यापक स्वरूप को विस्तार से समझने के लिए ‘‘अखण्ड भारत’’ शब्द पर ध्यान दें । ‘‘अखण्ड’’ अवस्था को ही योग की अवस्था कहा गया है जिसमें स्थित होने पर स्पष्ट ज्ञान हो जाता है कि दृश्य व अदृश्य जगत एक अविभाजित परम तत्व है। अखण्ड अवस्था को ही सत्य अनुभूति की अवस्था कहा गया है। क्रियायोग ध्यान के द्वारा योग अवस्था के प्रकट होने पर मनुष्य अनुभव कर लेता है कि सुख–दुःख, पाप–पुण्य, माया–ब्रह्म आदि समस्त द्वैत अनुभूतियॉं स्वप्नवत् हैं । सत्य केवल एक है अमरता, अद्वैत की अनुभूति।

‘‘भारत’’ शब्द की विस्तृत व्याख्या करने पर स्पष्ट होता है कि ‘‘भारत’’ शब्द ‘भा’ तथा ‘रत’ दो शब्दों को मिलकर बना है। ‘भा’ का अभिप्राय ज्ञान से है तथा ‘रत’ का अभिप्राय पूरी तरह से जुड़ने से है । ज्ञान तीन प्रकार का है । ब्रह्मा का ज्ञान अर्थात् सृजन करने का ज्ञान, विष्णु अर्थात् संरक्षण करने का ज्ञान तथा शिव अर्थात् परम कल्याणकारी परिवर्तन करने का ज्ञान । जब मनुष्य अपने स्वरूप को अखण्ड स्थिति में अनुभव करता है तो उसे अपना अस्तित्व ब्रह्मा (सृजन), विष्णु (संरक्षण) व शिव (परिर्वतन) में निहित पूर्ण ज्ञान तत्व के रूप में दिखाई देता है। ऐसी अवस्था में अनुभव हो जाता है कि मनुष्य का स्वरूप सर्वज्ञ तत्व है ।

अखण्ड भारत संदेश उपरोक्त वर्णित संदेश के गूढ़ रहस्य को व्यक्त करता है । जैसे–जैसे इस भाव का विस्तार होगा वैसे–वैसे भारत राष्ट्र का निर्माण होगा और राष्ट्र निर्माण की यह प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी है। आगे आने वाले 15 वर्षो के अन्दर भारत अपने शक्तिवान और ज्ञानवान स्वरूप में प्रकट होकर सम्पूर्ण विश्व की उच्चतम् सेवा करेगा ।

अखण्ड भारत संदेश का मुख्य लक्ष्य है, हर मानव को अपने अंदर स्थित अखण्ड ज्ञान–प्रवाह से परिचित कराना, ताकि समाज को संकीर्णता के दायरे से ऊपर उठाकर विराट विश्व का दर्शन कराया जा सके । इस समाचार-पत्र के विस्तार से समाज के सारे अंग - शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार, राजनीति आदि के स्वरूप में युगानुकूल परिवर्तन होगा । प्रत्येक देश की शिक्षा व्यवस्था सर्वोच्च स्थान पर होगी, जिसमें शिक्षित व्यक्ति रोजगार की दृष्टि से आत्म-निर्भर होगा। मानव-मानव के बीच एकता व प्रेम का शाश्वत् सम्बन्ध स्थापित होगा। एक ऐसे समाज का निर्माण होगा जो भारतीयता, वैज्ञानिकता तथा कर्मठता व आध्यात्मिकता की शाश्वत् व संयुक्त शक्ति के जीवन्त रूप को प्रकट करेगा।

fo'k"k क्रियायोग ध्यान के अभ्यास से मनुष्य को अनुभव हो जाता है कि उसका स्वरूप और दृश्य जगत अनन्त सर्वव्यापी अदृश्य शक्ति का प्रकाश है। जिस प्रकार लहर विशाल समुद्र की अभिव्यक्ति है। लहर और समुद्र दो नही हैं। ठीक उसी तरह दृश्य जगत भी लहर के रूप में है, जो सर्वव्यापी अनन्त निराकार की अभिव्यक्ति है।

Akhand Bharat Sandesh

Aim and Objects

Its main objective is to connect all nations together and to bring the realization in the Consciousness of human beings that the whole world is One Home and that all members of the Home are Children of God, fully charged with Omniscient, Omnipotent, Immortal and Omnipresent Consciousness. The name of Akhand Bharat reveals the same meaning. Akhand means undivided. Bharat means oneness with complete knowledge. Complete knowledge is known as Omniscient, Omnipotent, Immortal and Omnipresent Consciousness. Sandesh means message. The message of Akhand Bharat Sandesh will be delivered everywhere in bilingual language (Hindi and English).

Anyone who is charged with the thought that the whole world is One Home and that each and every person of the Home is a child of God, is a perfect person to serve like a Prophet. The nature of child of God is Omniscient, Omnipotent, Immortal and Omnipresent.

It is practically observed that the joyful devoted practice of Kriyayoga Meditation brings the same realization easily and quickly. Akhand Bharat Sandesh will spread this message everywhere and has decided to light the lamp of Kriyayoga Meditation in all homes of the world. The moment this newspaper will reach all persons of the world through the print, electronic and internet media, then heaven on earth will be observed. *Vasudhaivakutumbakam* will be celebrated by the majority of persons. *Vasudhaivakutumbakam* means the whole world is one home. This thought will automatically change all branches of education such as engineering, medical, philosophy, social science etc. Then all places of the world will become rich with all the facilities needed by human beings and thus, become most suitable to live in.

Glimpse to Kriyayoga

MAGH MELA 2014

The inauguration ceremony of Kriyayoga Magh Mela Program took place on the auspicious date of January 23rd, 2014. It was on this same day in 1936 when Paramahansa Yogananda visited and blessed the Mahavatar Babaji Banyan tree at the Kumbha Mela area. It was on January 23rd, 1936 that he also experienced the future of India, that it will be a bright nation in all dimensions.

(continued on Page 9)

23 जनवरी 1936 को योगेश्वर श्रीकृष्ण व प्रभु ईसा के अवतार श्री परमहंस योगानन्द कुंभ मेले में क्रियायोग प्रसार को द्रुत गति प्रदान करने के उद्देश्य से आये थे। कुंभ मेले व माघ मेले के आध्यात्मिक पर्व की अनेक तिथियों में 23 जनवरी का महत्व बहुत अधिक है। इसी दिन गुरूदेव स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने क्रियायोग माघमेले शिविर का उद्घाटन कर जनसमूह को संदेश दिया कि क्रियायोग विस्तार से भारत वर्ष का आध्यात्मिक वैभव, औद्योगिक व वैज्ञानिक साज–सज्जा पूरे विश्व में प्रकाशित होगी व भारत वर्ष सभी राष्ट्रों के लिए महत्वपूर्ण संदेश देगा, जिससे विश्व के सभी राष्ट्रों में आन्तरिक व आपसी युद्ध बंद होंगे व सभी विकास की ओर अग्रसर होंगे।

Kriyayoga Magh Mela Camp - Front View

Kriyayoga Practitioners at the Maghmela Camp

View of Kriyayoga Camp from Pantoon Bridge No. 2

Classes are held daily at the Kriyayoga Camp at Magh Mela from 7 to 9 a.m., 2 to 3:30 p.m. and evenings 4 to 6:30 p.m.
The Kriyayoga Camp is located on Triveni Rd adjacent to Pontoon Bridge #2.

The perfect celebration of Republic Day is to practice Kriyayoga Meditation

समाधि की अवस्था में अनुभव होता है कि क्रियायोग अभ्यास गणतंत्र दिवस का वास्तविक समारोह है।

Your Divine Help and Prayers are Needed to Support this Movement; e-mail us at AkhandBharatSandesh@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक: स्वामी श्री योगी सत्यम् द्वारा भार्गव प्रेस 11/4 बाई का बाग इलाहाबाद से मुद्रित एवं क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान, नई झूँसी, इलाहाबाद 211019 उ०प्र० भारत से प्रकाशित, दूरभाष (0532) 2567243 फैक्स (0532)2567227 मोबाइल नं० 9415217278-79, 941517281, 9415235084

R.N.I. No - UPHIN/29506/24/1/2000-TC

ई-मेल: AkhandBharatSandesh@gmail.com / KriyayogaAllahabad@hotmail.com **वेबसाइट:** www.Kriyayoga-Yogisatyam.org/AkhandBharatSandesh